जनवरी-मार्च 2024

समसामयिक हाइकु संचयनिका

हाइकु मञ्जूषा

स्व. डॉ. सुधा गुप्ता : श्रद्धांजलि विशेषांक

संपादक
प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

हाइकु मञ्जूषा त्रैमासिक

(सदस्यता शुल्क)

एक वर्ष	-	**400 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)**
पाँच वर्ष	-	**1600 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)**

Account detail : PRADEEP KUMAR DASH

A/c No. : 3282604179, IFSC : CBIN0281208

Central bank of India, Sitapur, (C.G.)

Mob. 7828104111

हाइकु मञ्जूषा

समसामयिक हाइकु संचयनिका

जनवरी-मार्च : 2024 (त्रैमासिक)

संपादक

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संरक्षक

डॉ. मिथिलेश दीक्षित

संपादक मण्डल

अविनाश बागड़े (नागपुर)

देवेन्द्र नारायण दास (बसना)

केशव मोहन पाण्डेय (नई दिल्ली)

प्रकाशन स्थल : साँकरा, जिला-सारंगढ़ (छ.ग.) पिन – 496554, मो.नं. – 7828104111

संपादकीय...

'हाइकु-मञ्जूषा' के सभी सदस्य एवं सुधी पाठक वर्ग को वर्ष 2024 आंग्ल नव वर्ष की ढेर सारी शुभकामनाएं व हार्दिक बधाइयाँ। वर्ष 2024 का यह प्रथम अंक हाल ही में दिवंगत सुप्रसिद्ध हाइकु कवयित्री स्वर्गीय डॉ. सुधा गुप्ता जी को श्रद्धांजलि अंक के रुप में समर्पित अंक है। श्रद्धेय हाइकु कवयित्री डॉ. सुधा गुप्ता जी हिन्दी हाइकुकारों में प्रथम पंक्ति की मूर्धन्य हाइकुकार थीं। सुधा जी के हाइकुओं में प्रकृति के प्रति एक सहज सम्मोहन का भाव देखने को मिलता है। डॉ. सुधा जी के हाइकुओं के संदर्भ में शैल रस्तोगी जी कहती हैं- "सुधा के हाइकु मन को छुते हैं, और जो रचना मन को छुए वही रचना श्रेष्ठ होती है।" सुधा जी की हाइकु रचनाएँ सचमुच हिन्दी हाइकु जगत की श्रेष्ठ हाइकु रचनाओं में स्थान रखती हैं।

वर्ष 2006 में हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ सात हाइकुकारों के परिचय, हाइकु एवं उनके विचारों को संग्रहित कर मेरे द्वारा 'हाइकु सप्तक' का प्रकाशन किया गया, जिसमें हिन्दी के सात यशस्वी हाइकुकार के रुप में डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव जी, उर्मिला कौल जी, डॉ. शैल रस्तोगी जी, प्रो. आदित्य प्रताप सिंह जी, डॉ. भगवत शरण अग्रवाल जी, डॉ. सुधा गुप्ता जी एवं डॉ. लक्ष्मण प्रसाद नायक जी सम्मिलित हैं।

1997 में हाइकु जगत में मेरा प्रवेश हुआ एवं ये मेरा सौभाग्य रहा कि प्रो. सत्य भूषण वर्मा जी से ले कर ये सभी श्रेष्ठ रचनाकार मेरे साथ, मेरे कार्य के साथ एवं 'हाइकु मञ्जूषा' के साथ बड़ी आत्मीयता से जुड़े हुए थे। वर्ष 2004 में महत्वपूर्ण हाइकु ग्रंथ 'हाइकु वाटिका' एवं 2006 में 'हाइकु सप्तक' तथा 'हाइकु मञ्जूषा' के प्रारंभिक प्रकाशन काल में हाइकु सप्तक में सम्मिलित रचनाकार स्व. डॉ. लक्ष्मण प्रसाद नायक जी को छोड़ कर अन्य सभी वरिष्ठों के पत्र, विचार, संस्कार, स्नेह व मार्गदर्शन मुझे निरंतर प्राप्त होते रहे। उस समय संचार हेतु

मोबाइल, फेसबुक या व्हाट्सएप उपलब्ध न होने के कारण, बात-चीत, विचारों व रचनाओं के आदान-प्रदान के लिए पत्र ही केवल संचार का एक मात्र जरिया था इसलिए सुधा दीदी जी के एवं इन सभी वरिष्ठ हाइकुकारों के बहुत सारे पत्र धरोहर के रुप में मेरे पास आज भी सुरक्षित हैं।

हाइकु सप्तक के छः रचनाकारों का देहावसान पूर्व में हो चुका, हाल ही विगत नवम्बर माह में हाइकु सप्तक की अंतिम कवयित्री डॉ. सुधा गुप्ता जी के देहावसान से हाइकु जगत में मुझे एक सन्नाटा सा महसूस हो रहा है। वर्ष 2004 में 'हाइकु वाटिका' और वर्ष 2006 में 'हाइकु-सप्तक' तथा 'हाइकु-मञ्जूषा' के प्रकाशन काल में दीदी डॉ. सुधा गुप्ता जी के पत्र व मार्गदर्शन मुझे निरंतर प्राप्त होते रहे, इधर कुछ वर्षों से उनकी वयता के कारण उनके हाथ काँपने लगे तथा उन्हें दिखाई व सुनाई कम देने लगी, इस कारण उनसे वार्तालाप बंद सी हो गई थी एवं हाइकु कार्य पथ में साथ छूट सा गया था परंतु उनके स्नेह व आशीष में कोई कमी नहीं थी। सुधा दीदी के जाने के उपरांत 'हाइकु सप्तक' के एक युग का अंत हो गया है। इन सभी वरिष्ठों की लेखनी से हमें सदा सीख लेनी होगी और वास्तव में इन सभी श्रेष्ठ वरिष्ठ रचनाकारों के बताये मार्गों को अनुसरण कर हमें हाइकु के इस प्रशस्त पथ पर आगे बढ़ना होगा तभी इन श्रेष्ठों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि साबित होगी।

'हाइकु मञ्जूषा' जनवरी-मार्च 2024 का यह अंक दिवंगत हाइकु कवयित्री डॉ. सुधा गुप्ता जी को श्रद्धांजलि स्वरुप समर्पित कर उनकी अमर आत्मा की अनंत शांति व सद्गति हेतु ईश्वर से विनम्र प्रार्थना करते हुए अश्रु पूरित श्रद्धांजलि ज्ञापित करते हैं, ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ...

~ प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'
संपादक : हाइकु मञ्जूषा

स्व. डॉ. सुधा गुप्ता जी

18 मई 1934 :: 18 नवम्बर 2023

श्रद्धांजलि के हाइकु

ये मोमबत्ती
लेखन अविरत
याद उनकी।

सुरभिमय
हाइकु सा जीवन
संचित धन।

श्रद्धा सुमन
सुधा गुप्ता सृजन
व्यथित मन।

~ अविनाश बागड़े

स्मृति के वन
दिवंगत सुधा जी
श्रद्धा सुमन।

रही न दीदी
भाई के पास अब
शेष हैं स्मृति।

स्नेहिल सुधा
हाइकु का संसार
धनाढ्य हुआ।

~ प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

सुधा पहुंचीं
सुधा सागर पास
एक होने को।

सदा रहूंगी
तुम्हारे आसपास
हाइकु बन।

माथे चंदन
हृदय सुधा रस
दीदी नमन।

~ अजय चरणम्

भाव लेखनी
चाँद का कैनवास
सुधा के चित्र।

प्रकृति मित्र
हाइकु के विन्यास
सुधा के चित्र।

सुधा कृतित्व
देती है श्रद्धांजलि
मृत्यु अटल।

~ सुशील शर्मा

दुखद घड़ी
विनम्र श्रद्धांजलि
भावों से भरी।

मन क्रंदन
सुधाजी को हमारा
कोटि वंदन।

उगता चांद
तारों के घराने में
गुम हो गया।

मृत्यु अटल
हुआ सुधा के बिना
सूना पटल।

स्मृतियां शेष
हाइकु रचनाएं
लिखी विशेष।

~ सुनीता दीक्षित
'श्यामा'

रो नहीं पाया
शोक समाचार पा
आंसू नैन में।

नभ से टूटा
चमकीला सितारा
मन तो रोया।

मेरा नमन
हे महा आत्म प्राण
विदग्ध मन।

~ देवेन्द्र नारायण दास

स्मृतियाँ शेष
हाइकु महारानी
श्रद्धा सुमन।

सुधा बहन
गागर में सागर
हाइकु भरे।

~ पुरोहित गीता

आशीष चाह
मन में रह गई
आप जो नहीं।

दर्द गहरा
हाइकु वाणी संग
विलुप्त सुधा।

~ कुन्दन पाटिल

अम्मा की छवि
सुधा दीदी में दिखी
गर्दन झुकी।

~ आर. बी. अग्रवाल

शब्दों की याद
अब है मरीचिका
बुझे न प्यास।

~ विवेक कवीश्वर

श्रद्धा सुमन
विनम्र श्रद्धांजलि
भावुक मन।

~ अरुण आशरी

दूर देश को
सुधा कलश ले
विलीन आत्मा।

मन-मंदिर
यादों में विराजती
नमन उन्हें।

शब्द मौन हैं
देते हैं श्रद्धांजलि
भर अंजुलि।

~ आभा दवे

धरा को छोड़
स्वर्ग के पथ पर
निस्पृह आत्मा।

सजल नेत्र
सगे और संबंधी
नेह के बंध।

सुधा सागर
ससक्त हस्ताक्षर
हाइकु रंग।

~ मनीष कुमार श्रीवास्तव

साहित्य को ही
प्रेरणा स्रोत बना
जीवन बीता।

साधना लीन
उत्कृष्ट व्यक्तित्व हो
जीवन जिया।

सहज बन
मोह ममता तज
प्रयाण किया।

मेरा नमन
सुधा नाम विभूति
ज्ञानदीप को।

~ चन्द्र प्रभा

गयी है "सुधा"
फिर देवों के पास
छोड़ वसुधा।

यही नियति
देवलोक में ही है
"सुधा" का स्थान।

~ अलंकार आच्छा

भीगे मन से
श्रद्धांजलि अर्पित
कठिन घड़ी।

आत्मा की शांति
दिवंगत के प्रति
कृतघ्न धरा।

हाइकु सूना
मुस्कुराता चेहरा
स्मृतियां शेष।

~ पूनम भू

चन्दन सुधा
हाइकु अमृत पी
अमर हुई।

कभी न बुझे
हाइकु ज्ञान ज्योति
सुधा से जली।

कोमल मन
भावों की निर्झरनी
था तव रूप।

~ पुष्पा मेहरा

लो रिक्त हुआ !
अमृत से भरा वो –
'सुधा' कलश।

क्या कहा – अस्त ?
न...न... कवि रहते
सदा अमर !

सदा ही दिया
ज्ञान उन्होंने, आज....
खालीपन भी !

कैसे संभव?
सुधा स्वयं ही लीन
पंचतत्त्व में।

बड़ा कठिन!
ये बताना – 'क्या
खोया'?
'उन्हें' खोकर।

जाना तो तय
फिर भी घबराता
मन बाँवरा।

रह...रह....के
दिल को कचोटती
उनकी यादें !

शाख से झड़ा
सर्वश्रेष्ठ गुलाब
उजड़ा बाग।

बिन बताए
चले वे चुपचाप..
कहीं मिलेंगे ?

अगली यात्रा!
अपने सूरज को
ढूँढने चली।

कहे स्वयं को
प्रबुद्ध होकर भी
'मैं निर्गुनिया' !

~ डॉ. पूर्वा शर्मा

दीप कलश
एक बार खो गया
अब न मिले।

याद बनी है
हाइकु में रहेगी
एक रोशनी।

~ कश्मीरी लाल चावला

अनभिज्ञ हूँ
सुधा का अस्तित्व
जान न पाई।

जान पाई मैं
पहचान तुम्हारी
जाने के बाद।

भाग्यहीन मैं
श्रद्धा अर्पण कर
करूँ नमन।

~ रुबी दास "अरु"

सुधा कलश
सिंचित व पुष्पित
हाइकु वन।

सजल नैन
मार्मिक वर्तमान
द्रवित मन।

सुधा अमृत
हाइकु कलाकृति
अमर हुई।

~ प्रमोदिनी शर्मा

स्मृति है शेष
बाकी सब निःशेष
सुधा विशेष।

जीवन जाना
होता है अनिवार्य
यादें हैं खास।

स्मृतियां अब
करेंगी परेशान
परिजनों को।

कैसे बनता
भावना का समुद्र
आंखें सजल।

~ सतीश राठी

स्वर्गारोहण
सुधा कलश सम
जीवन धन्य।

रचे हाइकु
मानवता के हेतु
अमृत रूप।

सुधा ही सुधा
जीवन से बरसा
हाइकु रूप।

उमड़ी यादें
बरसता दुलार
सुधा अपार।

~ गंगा प्रसाद पाण्डेय 'भावुक'

श्रद्धा - सुमन
सादर समर्पित
दुःखी है मन।

सदा जीवंत
भव्य सृजनालोक
कभी न अंत।

स्मृतियाँ शेष
हाइकु विस्तारित
हुए विशेष।

सार्थक नाम
इतिहास बना है
बोलेगा काम।

~ डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल'

अंक के रचनाकार

अर्चना 'अनुपम', अजय चरणम् , अमित शाह 'अमी', डॉ. अब्दुल वहाब, अविनाश बागडे, अलका पाण्डेय, अलंकार आच्छा, डॉ. आनन्द प्रकाश शाक्य 'आनन्द' आभा दवे, आरती परीख, आशा ज्योति, ए.ए. लूका, अंजनी कुमार 'सुधाकर', अंशु विनोद गुप्ता, कल्पना दुबे, कुंदन पाटिल, केशव यादव 'सारथी', गीता पुरोहित, गंगा पांडेय 'भावुक', चिन्मय शुक्ल, चंद्रभान मैनवाल, ज्योतिर्मयी पंत, देवेन्द्र नारायण दास, नरेंद्र श्रीवास्तव, निगम राज, निर्मला हांडे, निहाल चन्द्र शिवहरे, नेहा कटारा पाण्डेय, नीता छेड़ा, डॉ. नीता सुशील अग्रवाल, प्रतिभा त्रिपाठी, प्रतिमा प्रधान, प्रदीप कुमार दाश 'दीपक', प्रवीण कुमार दाश, प्रवीण सिंह बी. सिन्दल, पवन कुमार जैन, पुष्पा मेहरा, पुष्पा सिंघी, पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा', बन्दना गुप्ता, भुपिन्दर कौर, भैरव प्रसाद मेहरा, मधु गुप्ता 'महक', मधु सिंघी, मनीष कुमार श्रीवास्तव, माया वसन्दानी, मिथिलेश दीक्षित, मीनाक्षी कुमावत 'मीरा', मुरारी स्वामी, मंजु महिमा, मंजू सरावगी 'मंजरी', राजकिशोर राजपूत, डॉ. राजीव कुमार पाण्डेय, राजेन्द्र सिंह राठौड़, राधा बल्लभ अग्रवाल, रामप्रकाश पांडेय, रीतु प्रज्ञा, रूबी दास 'अरु', वृन्दा पंचभाई, विद्युत प्रभा , विनय श्रीवास्तव, डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल' शशि मित्तल 'अमर' शशि त्यागी, डॉ. शेख अब्दुल वहाब, स्वाति गुप्ता 'नीरव' सत्येन्द्र छिब्बर, सरोज रानी, सुनीता दीक्षित 'श्यामा', सुनीता पुनिया, सुनील गुप्ता, सुनील जैन राना, सुभाष शर्मा, सुरेंद्र बांसल, डॉ. सुरंगमा यादव, सुशील शर्मा, सूर्य करण सोनी 'सरोज', सूर्यनारायण गुप्त 'सूर्य', सोनम, हरावती लकड़ा, हंस जैन, ज्ञान भंडारी, श्रवण कालवा, श्रवण चोरनेले 'श्रवण'

---0---

❀ उत्कृष्ट हाइकु ❀

मेघ बरसे
धरती मुस्कुराए
मन हर्षाए।

मंदिर - घंटी
मुर्गे की बाँघ सुन
नया सबेरा।

चिड़िया चीं-चीं
शबनम की बूँद
भोर सुहानी।

खबर-खोज
समाचार सुनाया
चाय-चुस्की ने।

फूल महके
मन हर्षित हुआ
चहके हवा।

गाय रंभाई
बछड़ा लड़ियाए
शुभ-सुबह।

~ **अर्चना अनुपम**

गदरा गयीं
मेरी सारी मिट्टियाँ
तेरी बूँदों से।

ढूँढ रहा हूँ
बारिश के पानी में
नन्ही सी यादें।

~ **अजय चरणम्**

जल का कुंभ
बादल की पालकी
पवन कांधे।

अंधेरा दिन
आषाढ़ी घने घन
भरे नयन।

रोज देखती
पिता की बूढ़ी आँखें
यादें भटके।

शब्दों में प्यार
कलम का श्रृंगार
पत्र आधार।

झूमका खोया
सूने हो गये कान
अँखियाँ रोई।

~ **अमिता शाह**
'अमी'

दीप-कलश
रोशनी भर देते
नवरोशनी।

मन-विभोर
थामूँ क्षण को कैसे ?
बहा समय !

पुष्प गिरा है
महक गयी धरा
चुंबन किया !

छनछनातीं
नीरव झील-जल
सूर्य-किरणें!

सिंदूरी भाल
आकाश सुनहरा
अंगार भोर !
~ **अर्चना 'अनुपम'**

सात हैं वर्ण
इंद्रधनुष बना
चमकी बूंदें।

~ डॉ. अब्दुल वहाब

दौड़ता लहू
चलती है जिंदगी
सांसों की डोर।

~ अविनाश बागड़े

बरसा पानी
वसुंधरा महकी
मौसम धानी।

आ गई वर्षा
भरे ताल तलैया
मनवा हर्षा।

नभ गरजे
बिजुरिया कड़के
मन हर्षाया।

बूंदे टपकी
धरा की प्यास बुझी
भागी गरमी।

रोया आकाश
धरा का अंग खिला
दुल्हन बनी।

महकी फिजा
रिमझिम बारिश
बहकी हवा।

सावन आया
वर्षा पसारे पाँव
ठिठकी धूप।

वर्षा की बूंदे
टप टप गिरती
कजरी गाती।

हरित धरा
सागर उफनता
गाओ मल्हार।

नभ बरसा
पड़ गए हिंडोले
सखियां झूले।

सावन आया
झमाझम बरसे
यादों मे पिया।

धरा लजाई
ओढ़ पीली ओढ़नी
सरसों फूली।

भागा है तम
भोर की छाई लाली
सुप्रभातम।

सूर्य उदय
नयन पट खुले
सरका तम।

चित्र उभरा
खुला यादों का
बक्सा
सामने नक्सा।

गुरु वंदन
नित अभिनंदन
गुरु है ईश।

गुरु दे शांति
चेहरे पर कांति
निकाले भ्रांति।

गुरु प्रयास
दे जीवन की आस
तरासे हीरा ।

कोयल गाए
मनवा मेरा झूमे
मेघा बरसे।

पिया की याद
हसीन हर बात
मन का नाद।

पुरानी यादें
इतिहास दोराहे
मन रुलाए।

प्रेम का स्पर्श
बनाता है समर्थ
मिले डगर।

~ अलका पाण्डेय

धरा ने किया
बूँदों का रसपान
छू हुई गर्मी।

मेघों से दुखी
ले रेतीली चद्दर
सो गयी नदी।

ठनी माली से
मेड़ मिला पानी से
डूबा बगीचा।

मेड़ का धोखा
पानी को मिला रास्ता
डूबा किसान।

गाँव मुझमें
मैं थोड़ा-सा गाँव में
ले रहा साँसे।

टूटी छप्पर
दीवारों ने खो दिया
पिता का साया।

पिता का हाथ
कंक्रीट से निर्मित
रक्षा बंकर !

पिता की डाँट
झाड़ू बन आहिस्ते
बुहारे काँटे !

पिता की दुआ
जीते जी काम आए
जीवन बीमा !

पिता का दिल
ज़ीरो बैलेंस वाला
लाखों का खाता !

पिता का प्यार
जीवन देने वाला
अमृत प्याला !

पिता की आँखें
सब कुछ जानती
गूगल देवी !

पिता की व्यथा
पुत्र समझा जब
बना वो पिता !

घायल मीन
घावों पर नमक
सिंधु ने मला।

~ अलंकार आच्छा

राष्ट्र गौरव
कीर्ति गुनगुनाये
फैला सौरभ।

~ डॉ. आनन्द प्रकाश शाक्य 'आनन्द'

फूल-कलियाँ
गुमसुम हो रही
सुरक्षा कहाँ ?

घिनौना कृत्य
फैल रही है बेल
कानून फेल।

नैतिक मूल्य
खोखली हुई जड़ें
मौन पे खड़े।

वक्त की धार
कलयुग की मार
सब लाचार।

पीपल पेड़
समृद्धि का प्रतीक
झुकाते शीष।

खस्ता सड़कें
बारिश में नहाई
मुँह दिखाई।

हवा का शोर
पेड़ों पे इतराये
गजब ढाये।

बया घोंसला
मेहनत का फल
आशा अटल।

नदी -तालाब
वर्षा से करे बातें
भीगी है रातें।

नभ वितान
सोये चादर तान
कल का ध्यान।

मेघ मल्हार
तान छेड़े बरखा
बादल द्वार।

दूर गगन
लुभाता है चंद्रमा
लोरी गाए माँ।

खिलती कली
आँगन में है पली
घर की खुशी।

हवा झूलती
गीले कपड़ों संग
वस्त्र सुखाती।

सागर जल
निहारे इमारतें
महानगर।

आँख मिचौनी
बिजली है खेलती
घरों - डोलती।

पिता सहारा
है बच्चों का संसार
प्यार अपार।

तितली उड़े
फूलों का रस पिए
खुश हो जिए।

समुद्र तट
लहरें मचलती
मन हरती।

~ आभा दवे

मेघ मल्हार
टला धूप कहर
गाँव शहर।

चाँदनी रात
आँखों से टपकती
सुहानी यादें।

सूना अंबर
सितारों को निगले
घने बादल।

अरुणोदय
तृण तृण नाचती
मृदु किरणें।

रेत में रचे
समुद्र की लहरें
लू के थपेड़े।

निगल गई
रिश्तों की गहराई
चुप्पी की खाई।

अषाढ़ी झड़ी
लहरा कर लिखे
खेतों की गाथा।

मेह बरसा
नीली चादर तले
धरती सोयी।

निगल गई
सुनहरी वो धूप
सावन ऋतु।

धरा गगन
भीगी भीगी गुफ्तगू
तृण सर्जन।

बारिश थमी
भीगी सी धरती को
धूप चूंबन।

मेघ तांडव
गांव गांव बिछड़े
हाईवे टूटे।

मेघ सवारी
लूकाछूपी खेलती
धूप गौरैया।

नभ के द्वार
दामिनी के दस्तक
मेघ मल्हार।

सूखी डालियाँ
मेघराज पिरोये
वर्षा के मोती।

शांत हो चुका
सूरज का प्रकोप
मेह मल्हार।

बादल टोली
भरने को आतुर
धरा की झोली।

पावस ऋतु
बिजली के तार से
मोती टपके।

सूना अंबर
सितारों को निगले
घने बादल।

बादल टोली
भरने को आतुर-
धरा की झोली।

उछल रहा
यादों का समंदर
मन भीतर।

पहाड़ी देश
अंगड़ाइयाँ लेती
सड़क खड़ी।

रण प्रदेश
थपेड़े से त्रस्त सी
सड़क लेटी।

गाँव पहुँची
सड़क खो ही गई
खेतों के बीच।

भीगी भीगी सी
स्मरण पगडंडी
मन-जंगल।

निगल गई
सुनहरी वो धूप
सावन ऋतु।

सूखे गुलाब
तरोताज़ा रखते
सुहानी यादें।

पत्तियाँ संग
हवा गुनगुनाती
प्रभात राग।

शाम ढलते
समुद्र में नहाये
पथिक सूर्य।

वर्षा की झड़ी
झोंपड़ी में सिगड़ी
गीली व टूटी।

हवा मस्तानी
पेड़ पौधों को छूती
गीत बुनती।

भोर की बेला
पूरब से निकला
रवि का ठेला।

ग्रीष्म कहर
विरहिणी सरिता
सुखाए नीर।

बाबुल घर
खिलखिलाती मिली
पहाड़ी झील।

संभाल रहा
सुहाना बचपन
दिल संदूक।

~ **आरती परीख**

बासंती प्रिया
नैन-सैन संवाद
हरषे जिया।

ठंडी फुहार
मन-मयूर हर्षा
आई बहार।

हमें न भाते
दुखियारी के आँसू
सैलाब लाते।

पेट की आग
महँगाई की मार
पुराना राग।

पुष्प खिलाए
जीवन में बसंत
सुख अनंत।

प्रातः की बेला
छाई हुई है धुंध
दिखे न मेला।

छत मुंडेरी
दबे पांव उतरीं
रवि-रश्मियां।

किसे न भाता
उदित होता सूर्य
स्वर्ण लुटाता।

हाल पुराना
टूटे दिल के तार
जग बेगाना।

हैं तो चूड़ियाँ
प्रेयसी का श्रृंगार
बनी बेड़ियाँ।

भिगोती रहीं
रिमझिम फुहारें
पिय की पाती।

उगेगी भोर
किलकारी का शोर
मन विभोर।

धरा पे आतीं
नूतन राह दिखातीं
रवि-रश्मियां।

फूल लताएँ
करतीं सुरभित
दसों दिशाएँ।

~ आशा ज्योति

बरखा आई
हरियाली है छायी
धरा मुस्काई।

भाषण वीर
पकाता ख्याली खीर
झूठी तस्वीर।

पिता का हाथ
सफलता की सीढ़ी
भूलें न कभी।

बिखेरो बीज
दिल के जमीं पर
प्रेम पनपे।

~ ए.ए. लूका

ढूँढती आँखें
तपन स्वेद भर
अंबर ताके।

एक झकोरा
है शीतल सा आया
पावस लाया।

टापुर टिप
टिप टिप टापुर
वृष्टि आतुर।

आया बादल
घनघोर घटा सा
द्वार खड़ा सा।

बरस उठे
कपसीले बादल
भीगे पागल।

खेत दरार
जल सिक्त हो गये
बीज बो गये।

देर दुरुस्त
आया है असाढ़
मित्र प्रगाढ़।

टर्रा उठे हैं
स्वागत में दादुर
अति आतुर।

खुश कृषक
कीच माच मचाता
मल्हार गाता।

शस्य श्यामला
वसुधा है हर्षित
हल कर्षित।

बेच रहे हैं
खुलेआम अफीम
बने हकीम।

तार तार है
नारी आज अस्मिता
व्याध धर्मिता।

पुनः द्रोपदी
चौपड़ दांव लगी
नजर झुकी।

~ अंजनीकुमार 'सुधाकर'

रिश्तों का स्नेह
सर्वदा प्रज्ज्वलित
मन आँगन।

~ अंशु विनोद गुप्ता

सावन खूब
झमाझम बरसे
गर्जे तड़के।

पड़ा हिंडोला
सखियां मिलजुल
कजरी गातीं।

हरे-भरे से
जंगल उपवन
सावन आया।

उत्पाती हवा
आन्दोलित समुद्र
वर्षा का जोर।

भय का साया
खौफनाक मंज़र
सहमे लोग।

~ कल्पना दुबे

बढ़ता पानी
परिवार डूबा है
खत्म कहानी।

~ कश्मीरी लाल चावला

सघन वन
मनु कर्तव्य निष्ठ
प्रकृति खुश।

दिव्य दर्शन
सभ्यता व संस्कृति
जग रोशन।

~ कुन्दन पाटिल

एक्वेरियम
दायरे में सिमटा
मूक जीवन।

~ केशव यादव 'सारथी'

बदरी छाई
पड़ी वर्षा फुहार
भीगी धरती।

तृषित धरा
पड़ी वर्षा फुहार
सोंधी खुशबू।

सांझ ढलते
घरोंदा तलाशते
पक्षी लौटते।

~ गीता पुरोहित

तपता सूर्य
वृक्ष नतमस्तक
मांगता पानी।

ताप ही ताप
पसीने से नहाया
श्रमिक गात।

बुजुर्ग पिता
उपेक्षा का शिकार
जीवन शूल।

पितृ दिवस
मनाओ हर दिन
यही उत्कर्ष।

पिता के बाद
मिली बीमित राशि
बच्चे आबाद।

~ गंगा पांडेय 'भावुक'

गायक मौन
अनहद नाद को
सुनता कौन ?

नाचता मोर
चितकबरा नभ
दादुर शोर।

झींगुर गाये
जुगनुओं की लड़ी
सावन झड़ी।

वक़्त की बात
सुख दुःख है साथ
ख़्वाब जुगनू।

बागों में झूले
गोरी का मन डोले
पिया निर्मोही।

मेघ गरजे
दिन रैन बरसे
मन तरसे।

बागों में झूले
गोरी का मन डोले
पिया निर्मोही।

मेघ कपास
खिले आसमान पे
धरा है प्यासी।

वर्षा है रूठी
मेघ गये छुट्टी पे
बुलाये कौन ?

सूखते ताल
पशु पक्षी बेहाल
मेघ जंजाल।

फ़िज़ा में खुशबू
यादों के सूखे फूल
पन्नों के बीच।

तंग इन्सान
ओढ़े चुप्पी चादर
ताके आकाश।

मीठे घेवर
रिमझिम बरखा
गीत मल्हार।

चूनर धानी
पहने ऋतुरानी
तीज सुहानी।

सुलगी यादें
गीली लकड़ी जैसी
धूमिल आंखें।

बढ़ते बच्चे
खर्च हो रही देह
नए घोंसले।

ख़्वाब टूटते
पुच्छल तारे जैसे
रिश्ते छूटते।

जीव की चाल
फंसा मोह के जाल
जग जंजाल।

एकाकी पथ
तन है लथपथ
ज़िन्दगी मौन।

~ चिन्मय शुक्ल

सावन बर्षा
किसान का चेहरा
खुशी से झूमा।

भीगते बच्चे
सावन का आनंद
हुआ दोगुना।

बड़ा होता है
सदा झुकने वाला
ठूंठ क्या झुके।

घने वृक्षों में
यहाँ वहाँ झाँकती
बेचैन धूप।।

उम्र के साथ
रेत से सरकते
बेजान रिश्ते।

मेघों का क्रोध
टूटा सूरज पर
वसुधा हँसी।

घने वृक्षों में
यहां वहां झांकती
बेचैन धूप।

तूफानी वर्षा
डुबोए किसान के
सारे सपने।

धूप व छाया
दोनों ने समझाया
वर्षा की आशा।

डाल डाल के
सिर चढ़ के बोला
वर्षा का नशा।

देख घटाएं
जंगल में करें मोर
मंगल नृत्य।

वर्षा की झड़ी
सुहागन भी चली
पिया की गली।

हवा हवा है
घमंडी है लेकिन
दिया दिया है।

~ चंद्रभान मैनवाल

मेघ मृदंग
थिरकती बिजली
जल तरंग।

छिड़की बूंदें
अंकुर अंखुआए
हरित धरा।

लड़ते मेघ
चमकी तलवारें
नभ मैदान।

दौड़ें बादल
बहते स्वेद कण
धरती भीगे।

हीरक कण
झिलमिल नाचती
ओस की बूंदें।

बरसे मोती
श्वेत हुई धरती
बिखरे ओले।

~ ज्योतिर्मयी पंत

तपती हवा
चिड़िया बैठी नीड़
जेठ की गर्मी।

दामिनी नाचे
मेघ ढोल बजाये
वसुधा हंसे।

छप्पर छानी
रात भर टपके
घर में पानी।

बारिश रात
मन में हलचल
प्रणय गात।

उनका आना
बरसात की रात
हँसी खिलना।

ऋतु मस्तानी
खेतो में हरियाली
बरसे पानी।

~ देवेन्द्र नारायण दास

रिश्ते काँच से
जरा में टूट जाते
चुभन देते।

तुम जो नहीं
रंग अनमने से
बैठे उदास।

प्यार ने खोले
बंधन संसार के
मिटीं दूरियाँ।

स्पर्श प्यार का
अमृत पिला गया
जी उठी साँसें।

तुझ में जादू
महकते हैं फूल
तेरे आते ही।

प्यार के दीप
अँधेरा हटा गये
शेष रोशनी।

~ नरेन्द्र श्रीवास्तव

माँ मिल गई
हुई ममतामयी
ज़िन्दगी नई।

नेह निशानी
बसी धड़कनों में
बनी कहानी।

धुन बनाएं
आप गुनगुनाएं
साज़ बजाएं।

दिल चहके
मौसम मतवाला
मन बहके।

तितली आई
बगिया उल्लसित
मन हर्षित।

फूलों पे डोले
रस पीकर भौंरा
प्यार ही घोले।

ठोकरें खाते
कामयाबी मिलती
बढ़ते जाते।

चिड़िया बोली
पंख फैला के उड़ो
करे ठिठोली।

छपाक छम
पानी ख़ूब बरसा
दिल दहला।

दिया जलाना
लाज़मी था मनाना
साथ में लाना।

सूनी सड़क
पसरा था अकेला
गर्माया घाम।

देह जुलाहा
यायावर यादों सा
जीवन बहा।

हुई थी बात
जुन्हाई वाली रात
मिली सौगात।

विचारोत्कर्ष
सहेजे मेरा मन
उसका स्पर्श।

खोकर आपा
पूरा जीवन तापा
अंततः स्यापा।

आकांक्षा घेरे
मन पपीहा टेरे
ख़्वाब घनेरे।

~ निगम राज़

धरा बेचारी
बारिश की शैतानी
खूब है टूटी।

फूलों का हार
देवों का प्यारा साज
माली का श्रम।

ये पीले खेत
मचलती सरसों
मन हरती।

फूल पत्तियां
पेड़ पौधों की शान
धरा का गर्व।

बाग सा गांव
बदतर हो गया
मुर्दा घर है।

रेत निकले
दिन रात नदी से
किनारा रोए।

क्रशर चले
पहाड़ों पर नित्य
छलनी छाती।

शहर फैले
खेत सिकुड़ जाए
विकास गाथा।

गुलमोहर
लाल सुर्ख है पेड़
स्वर्ग का फूल।

~ निर्मला हांडे

पेड़ों की छाँव
याद आ रहा गाँव
कागा की काँव।

बेलों का घेरा
निखरा कोना कोना
हरा भरा सा।

कृषक गायें
मधुरतम तान
ऊँची मचान।

अनुपम है
बादल का धरा से
प्रेम सम्बन्ध।

जल तांडव
संकट में किसान
क्या है निदान।

जल ही जल
ग्लेशियर पिघले
कृत्यों का फल।

ऊसर वन
मेघों का पलायन
प्यासे पखेरू।

खिलौने जैसे
बहते जन जन
जलप्लावन।

सावन गीत
हमारी बगिया में
लतायें गायें

मेघों की आस
कैसे बुझेगी प्यास ?
आया सावन।

घर में वन
मन में वृन्दावन
कान्हा सा मन।

अपना गाँव
मनमोहनी छाँव
पौध लगायें।

जीवनदाता
विटपों को नमन
हर्षित मन

पौधे हैं लघु
होंगें वृहदाकार
देगें बयार।

~ निहाल चन्द्र शिवहरे

जलता सूर्य
उबलता सागर
सहमी धरा।

~ नेहा कटारा पाण्डेय

पल्लू के छोर
झूल रही गृहस्थी
भूलाती मैका।

~ नीता छेडा

निर्झर अंग
इन्द्रधनुषी रंग
सूर्योर्मि संग।

संगीत वन
निर्झर कल ध्वनि
लुभाये मन।

सोत अन्तस
अश्रुधारा सा बहे
जी करे हल्का।

पर्वत श्रृंग
उत्स ओढ़नी बन
भरें आंचल।

गुरू निर्झर
प्रवाह निरंतर
सीख अजर।

~ डॉ. नीता सुशील अग्रवाल

सूखी सी देह
हाल धरा का देख
रो दिए मेघ !

नभ के द्वारे
मेघों ने डेरा डाला
धूप ने ताला।

मेघों में रार
घबराकर रवि
हुआ फरार।

सुन गर्जना
दामिनी दौड़ी आई
ले कर टार्च।

सूर्य को सर्दी
ओढ़े काली कमरी
सावन मास।

चाहत नहीं
ज़रुरत है बेटी
नमक जैसी।

धरा बेहाल
भादों हुआ गद्दार
धूप का यार।

मेघ ज्यों छंटे
धूप ने हथियाया
पूरा आकाश।

तन कंकर
बन जाता शंकर
पीड़ा पी कर।

शिशु सा सूर्य
बैठा वृक्ष की गोद
पीने को ओस।

~ प्रतिभा त्रिपाठी

गुलदस्ते में
बैठा मुँह फुलाए
पुष्प अकेला।

लुटा के मोती
मेघ करें कमाल
नमी बहाल।

पोते पोतियाँ
अतीत की खिड़की
कल के द्वार।

नींद चिरैय्या
उड़ गई चुगने
यादों के दाने।

मेघ करते
वर्षा से मुहब्बत
पीट ढिंढोरा।

गहरी नींव
पिता की ज़िम्मेदारी
बच्चे संस्कारी।

रहो उदार
भाषा बहती नदी
बहे अबाध।

~ प्रतिमा प्रधान

बिखरे ख्वाब
रो रहे परिजन
ढूंढते लाश।

भोर का पंछी
लौटे आखिर शाम
ले प्रभु नाम।

प्रभु की लीला
अच्छे-बुरे की राह
चुनाव तेरा ।

हिमानी झील
बड़ी तेज थी हवा
बिखरे नीड़।

पहुँची राखी
चंदा मामा हैं खुश
बंधी कलाई।

मुट्ठी में चाँद
लिख आया तिरंगा
देश का नाम।

दीप जो जला
अज्ञान का अंधेरा
भाग निकला ।

दीपक जला
रोशन कर चला
जग समूचा।

मौन को सुनो
ईश्वर से मिलोगे
एकांत चुनो।

छोटी चिड़िया
चीँ चीँ कर कहती
गिद्धों ने नोचा।

खुली किताब
मिले सूखे गुलाब
स्मृति तेज़ाब।

नया मौसम
तन्हाई से शिकवा
मुस्काया गम।

खुली किताब
गहरे हैं जज़्बात
गीले अल्फाज़।

खुली खिड़की
छुपा था जो मन में
आँखों में दिखी।

आया सैलाब
बह गये उर के
सजाये ख्वाब।

ख़ामोश शाम
सिन्धु पूछता रहा
उनका नाम।

~ प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

तपती धरा
मेघों का मनुहार
वर्षा संगीत।

~ प्रमोदिनी शर्मा

नदी बहती
धरा खुश हो रही
पीड़ा निकली।

धान की बाली
किसान का पसीना
सोना सुहाना।

अंजीर फल
हो यकृत निरोग
औषधि शोध।

~ प्रवीण कुमार दाश

तरबतर
यादों की बौछारों से
मन की माटी।

फूलों के गीत
शब्दों में मकरंद
मन भँवर।

जल प्रहार
भयंकर सैलाब
सब लाचार।

गोरा दिवस
संध्या बहू सांवली
फिर प्रभात।

तुलसी पौधा
जीवन का अमृत
रखे चिरायु !

उड़ते पंछी
मरुथल में पानी
नया सवेरा !

आया सावन
नाचे मोर पपीहा
मन भावन।

बरसे मेह
झरनों का संगीत
मेघ मल्हार।

मन मीत हो
दिल में समाहित
फूल में भौंरा !

रसिया मन
देह से देहातीत
ईश विलीन !

अमृतांजलि
डेढ़ इंच मुस्कान
हार की जीत !

~ प्रवीण सिंह बी.सिन्दल

है हठयोगी
फुनगी पे लटका
छोटा सा आम।

कब सो गयी
खाली हाँडी के संग
चूल्हे की आग।

सुर में सुर
मिला रहे दादुर
वीणा-नूपुर।

अपने नीचे
अँधेरे को दीपक
कस के भींचे।

~ पवन कुमार जैन

बिछड़े पल
यादें आ-आ मिलातीं
लौटते नहीं।

रात अँधेरी
प्रहरी रातरानी
जागे अकेली।

आज सबेरे
डाल से फूल बोला
छोड़ो उदासी।

संकल्प धुन
तिल-तिल जलती
नेह में बाती।

~ पुष्पा मेहरा

जर्जर घर
नया रंग-रोगन
यादें पुरानी।

~ पुष्पा सिंघी

नवल छंद
मालती फूल माला
महकी गली।

~ पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा'

पूजा की थाली
सुबह की आरती
साथ रंगोली ।

चन्दा की लोरी
अँधेरे की गोद में
सो गई रैन।

~ बन्दना गुप्ता

विरही मन
धौंकनी से उद्गार
मूर्छित मन।

तन तंदूर
खयालों के सपने
जीता विरह।

विरही तन
पथ पर पलकें
मन अधीर।

इत्र लिफाफा
सखियों का मिलन
रुहानी खुशी।

बाल सखियाँ
नेही मितव्ययिता
हृदय ग्राही।

मेघ मंडल
झाँकता दिनकर
सखी हर्षित।

छाया बसंत
सखियाँ अलबेली
हिया प्रसन्न।

नूतन वर्ष
पल्लवित कोपलें
हर्षित स्वप्न।

~ भुपिंदर कौर

बरसी बूंद
नहाती छुईमुई
पलकें मूंद।

~ भैरव प्रसाद मेहरा

माह आषाढ़
अदृश्य है क्षितिज
बादल घिरा।

आया आषाढ़
अवनि व अंबर
प्रेम प्रगाढ़।

लाया आषाढ़
मेघ, जल, चपला
धरा हरित।

विचित्र चित्र
बने बादल संग
मन मोहक।

उड़ते मेघ
काला सफेद रंग
मोहते मन।

सावन दूल्हा
लाया हरी चूनरी
धरा बावरी।

बाराती वर्षा
संग इन्द्रधनुष
नाचे पवन।

मीठी है बूँदें
इठलाती दामिनी
बजाते साज।

प्रणवाक्षर
ब्रह्मा विष्णु महेश
तीनों में एक।

गुरु की कृपा
जीवन में प्रकाश
अज्ञान नाश।

गाता प्रभात
बीत चुकी है रात
नयी किरण।

बंशी की धुन
मोहित है गोपियाँ
झूमती राधा।

घर में वृद्ध
गृह तीर्थ समान
मिले आशीष।

बड़े बुजुर्ग
अनुभव भंडार
मिलता ज्ञान।

ईश्वर रूप
वृद्ध है पतवार
खेवनहार।

~ मधु गुप्ता "महक"

धैर्य की गाँठ
कर्मठता की डोर
सफल व्यक्ति।

माटी का खेल
कुछ पलों का मेल
जीवन रेल।

धान की बाली
आशान्वित नजर
भूखा किसान।

ज्ञान विस्तार
यात्रा करते शब्द
काव्य निर्माण।

~ मधु सिंघी

नवल भाव
जीवन संजीवन
धवल मन।

मेघ कहर
पानी में है शहर
चारों पहर।

बोर्ड पे लिखा
अमृत सरोवर
पानी दूभर।

मन-विचार
स्वयं पे नियंत्रण
जीवन सार।

जल प्रतीक्षा
नभ में टकटकी
धान का खेत।

~ मनीष कुमार श्रीवास्तव

देखा सुमन
छा गया मधुमास
मन के वन !

है मनोहर
जग की देख लें श्री
नयन भर।

रंग भरे हैं
ज़िंदगी की आस ने
हर पात में।

तोड़ना फूल
समय से पहले
है बड़ी भूल ।

यह अँधेरा
रोशनी को छीन ले
सम्भव नहीं।

रेत के घर
सागर की लहरें
कब ठहरें !

ताप-त्रास में
सूख रहीं डालियाँ
मधुमास में।

रंग पहन
लतिका भी लगती
आज दुल्हन।

रोशनी लायी
चाँदनी में नहायी
शाम यूँ आयी ।

होती विलय
माधवी माधुर्य में
प्राणों की लय ।

शक्तियाँ जलें
रावणी प्रवृत्तियाँ
अन्दर पलें !

पुतले सिले
असली तो आज भी
घूमते मिले !

माता की गोद
कोमल-सी कलिका
देती है मोद !

यादों का गाँव
रुनझुन पायल
कोमल पाँव !

जागो बिटिया
सुबह हुई अब
बोली चिड़िया !

माता जो गाये
नींद में भी बच्ची के
होठ मुस्काये !

माँ की डायरी
काटा-कूटी कर दूँ
जल्दी भर दूं !

तुम ही हो माँ
तुमसे बढ़कर
स्वर्ग है कहाँ !

क्यों री तितली
तेरी रंगीन फ्राक
किसने सिली !

एक चिड़िया
एक दाना ले उड़ी
घर के लिए !

कौन आ रहा
परियों के देश से
फोन आ रहा !

सपना आया
बिटिया ने नभ में
प्लेन उड़ाया।

सजाये झाँकी
यादों में बसाये हूँ
तस्वीर माँ की !

~ मिथिलेश दीक्षित

स्वच्छंद उगी
खरपतवार सी
जिद्दी इच्छायें।

तोड़ दायरे
मौसम ने बदले
ढंग पुराने।

जीवन इच्छा
खतरों से जूझती
पेट की क्षुधा।

रेशों से बुने
जुलाहिन बया ने
नीड़ निराले।

ढापती लाज
चिथड़ों में लिपटी
मजदूर मां।

रिश्ते पीटते
स्मृतियों के मृदंग
मृत्यु के बाद।

महंगे रिश्ते
चंद लफ्जों में बिके
स्वार्थ के भाव।

गर्भ में घुली
संस्कारों की रंगत
माँ की संगत।

भ्रम के किले
भरभरा के ढहे
सच की राह।

गिरि पे बिछे
हरियाले बिछौने
चाय बागान।

अंधेरी रैन
बाँचे हिय के नैन
संवेद लिपि।

स्नेह बुहारे
रिश्तों पे जमी धूल
दिलों के शूल।

अंधेरी रैन
बाँचे हिय के नैन
संवेद लिपि।

नित बाजती
विभावरी के पग
साँझ झाँझर।

~ मीनाक्षी कुमावत 'मीरा'

भीगा आंगन
हरषे तन-मन
बरसे घन।

सावन सूना
चुप-चुप कोयल
बिन साजन।

मस्त बयार
सावन की फुहार
झूमे बहार।

धानी चूनर
गीत रिमझिम के
गाये बयार।

~ मुरारी स्वामी

ग्रीष्म तपन
गुलमोहर हँसे
रक्ताभ दंत।

सूरज तपे
सूखे नदिया-नाले
भीगा है तन।

मानव मन
शुष्क ग्रीष्म सरीखा
करुणा लुप्त।

विकल मन
तपे तन विरहा
मेहा बुलाए।

अमलतास
दे रहा अहसास
बसंत जैसा।

धूप-छाँव की
देखी आँख-मिचौली
छाँव न मिली।

ताश के पत्ते
बिछे चादर पर
ग्रीष्म-सौगात।

बर्फ़ के गोले,
बने रंग-बिरंगे
गर्मी की शान।

गुलमोहर
रोमांचित, पाकर
सूर्य उष्णता।

टन टनाई
घंटी कुल्फी वाले की
गरमी आई।

ग्रीष्म-सूर्य सा
मन क्रोधित देख
कटे वृक्षों को।

आत्मा के साथ
बसे हैं बतियाते
पिता श्री मेरे।

~ मंजु महिमा

बरसा पानी
सूखा आँखों का
पानी
भू जल मग्न।

~ मंजू सरावगी 'मंजरी'

आषाढ़ी शाम
लिखे सिंदूरी पत्र
व्योम के नाम।

वर्षा की भोर
खिला इंद्रधनुष
मन विभोर।

आई बारिश
महका मकरंद
भौंरा स्वच्छंद।

बदरा कारे
झिरझिर बरसें
साँझ सकारे।

वर्षा सुहानी
घटाएँ चहुँओर
नाचता मोर।

गिरता पानी
महक उठी माटी
मौसम धानी।

पोखर तट
दादुर टर्र टर्र
गाल बजायें।

नदी में बाढ़
टूटते तटबंध
मुग्ध धाराएँ।

मेघ सघन
हवा की गुज़ारिश
आई बारिश।

मेघ बरसे
धरा की देह भीगी
नदी हरषै।

वज्र चमके
तरू की काया भीगी
खग दुबके।

व्योम है मंच
बहरूपिये मेघ
धरते स्वाँग।

बाढ़ का पानी
कागज की नाव में
बाल कहानी।

ऋतु पावस
भेक गाए मल्हार
सुर न ताल।

छोटा सा गाँव
गिरि पे पल्लवित
नीम की छाँव।

शरद निशि
चाँदनी चित्तचोर
थिरका मोर।

आई दिवाली
दीप धीर-गंभीर
हरे तिमिर।

रो रहा वन
क्रूर लकड़हारा
काटे चंदन।

~ राजकिशोर राजपूत

ग्रीष्मावकाश
बच्चों का पर्यटन
नानी का घर।

तिरछी दृष्टि
नयनों का काजल
पिया बुलाये।

~ डॉ. राजीव कुमार पाण्डेय

वर्षा की बूँद
पात पर उतर
लुढ़क गई।

बिना तपन
मेघ भी न बरसे
कर्मो का फल।

श्यामल मेघ
हरियाली को देख
चूमते धरा।

मरू प्रदेश
कण कण में शौर्य
अमर कथा।

महकी हवा
धरा भी मुस्कराई
बरखा आई।

सौंधी महक
आंगन में टपकी
नाचती बूंदे।

संध्या उतरी
घर लौटने लगी
रंभाती गाय।

सूनी बगिया
मोबाइल का युग
खो गए बच्चे।

नीलगगन
कादम्बिनी सुहाती
हर्षित मन।

नाकाम जिद्द
कब हद में रहे
हवा व पानी।

दादा का मन
अपना बचपन
पोते में ढूंढे।

हड़पी जमी
नदी भी कहाँ जाए
घरों में आए।

नानी सुनाती
हर रोज कहानी
जीवन्त पात्र।

स्कूल में छुट्टी
बच्चों की पंचायत
पीपल छाँव।

नानी का घर
यादों में बसी हुई
एक कहानी।

भूले कौशल
श्रम से दूर करे
मुफ्त की लत।

टपकी बूँद
कर अमृत पान
पात मुस्काए।

तस्वीर बना
अब पिता मौन है
शान्त चितेरा।

बरसे मेघा
हवा लोरियाँ गाए
झूमते पात।

झूमती बूंद
पात पर उतरी
फिसल पड़ी।

संचित धन
बुढापे का सहारा
कौन किसका।

~ राजेन्द्र सिंह राठौड

ठिठक गयी
बरगद के तरे
बौराई धूप।

'आँखों' से सुनी
बहरी बालिका ने
'गिद्धों' की बातें।

नन्ही सी जान
दिन है समंदर
रात पहाड़।

अल्हड़-कली
सास के पल्लू तले
फूल सी खिली।

ओढ़ रज़ाई
ठंडक को चिढ़ाती
पूस की रात।

शीत के आते
'जलने' लगी आग
सौतिया डाह।

बर्फ़ के 'गोले'
मैदानों में फोड़ती
आतंकी हवा।

~ राधाबल्लभ अग्रवाल

बिल में पानी
सारे सांप भागते
चुनाव आया।

नदियाँ माता
घर के सारे कूड़े
गोद में जाता।

ये ढांचा कैसा
श्वास जब छूटते
रिश्ते टूटते।

~ रामप्रकाश पांडेय

काली बदरी
बरसी छमाछम
नाची बावरी।

नहायी धरा
खुश हुए किसान
है हरा-हरा।

भाए सवेरा
हँसते, गाते तरू
देते बसेरा।

~ रीतु प्रज्ञा

क्रोध से लाल
दहकता सूरज
धरा अशान्त।

धरा की गोद
सूरज ने बिछा दी
सिन्दूरी शाम।

विषैली हवा
प्रदूषित धरती
जीवन अंत।

वृद्ध सूरज
हुआ निराश देख
निस्तेज धूप।

भोर होते ही
महि का तन छूने
धूप उतरी।

ओस में भीगी
शाखाओं ने ओढ़ ली
धूप की शाल।

मध्याह्न बेला
उग्र रवि को देख
धूप तड़की।

नौ तपा संग
रवि को आते देख
धूप भड़की।

हौले हौले से
सीढ़ियों से उतरी
वयस्क धूप।

समीर बहें
झरते पीले पत्ते
बन कंचन।

~ रूबी दास "अरु"

बरस रही
बूंदें धरती पर
हर्षाई गोरी।

नैनन गीत
मधुर मिलन के
ख्वाब सलोने।

बूंदें बरसी
रिमझिम सावन
गीत सुनाए।

नन्हे परिंदे
बनाते आशियाना
जोड़ तिनका।

कटते पेड़
उजड़ा आशियाना
खग बेचैन।

काले बादल
छा गए नभ पर
झूमता मन।

पंछी बनाते
सुंदर सा घोंसला
जोड़ तिनका।

बारिश बूंदें
छम-छम बरसे
गीत सुनाए।

आषाढ़ आया
संग बादल लाया
मन हर्षाया।

हरित धरा
रिमझिम बरसे
जल की धारा।

~ वृंदा पंचभाई

बहती धारा
अचल से भूतल
जीवन मंत्र।

महा तर्पण
जीते जी हो न पाया
पितर सेवा।

~ विद्युत प्रभा

कस्तूरी रिश्ता
था वो कोई फरिश्ता
दूरी बलिस्ता।

वो है कस्तूरी
मैं हूँ मृग अकेला
मृगया प्यार।

तिनका मौर
लहरों पर तिरे
सागर मौन।

लहरें डोलें
सागर वक्ष पर
सुता समान।

जीवन नौका
सागर समस्याएँ
हल हैं चप्पू।

मन सागर
भटकाव भँवर
पार लगाओ।

नदिया धारा
सागर मौजों संग
जीयें जीवन।

~ विनय श्रीवास्तव

अष्टांग योग
मन - शरीर स्वस्थ
कभी न रोग।

दुःख निवृत्ति
योगाभ्यास सर्वार्थ
अच्छी प्रवृत्ति।

रक्त संचार
नई स्फूर्ति सर्वथा
योग आधार।

सदा उत्साह
सुबह - शाम योग
सीमित चाह।

ऋतु बदली
पात झरने लगे
हवा मचली।

~ डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल'

प्रकृति जाने
पहाड़ों का महत्व
रोके तूफान।

मेघा बरसे
बुझी धरा की प्यास
सौंधी सुवास।

गिरि दरके
प्रलय दुखदाई
टूटते बंध।

ग्रीष्म प्रकोप
त्राहिमाम पुकारें
सकल प्राणी।

पिता का त्याग
जीवन का आधार
घर की नींव।

पिता का साया
सुख की ठंडी छाँव
अटूट स्नेह।

पिता का स्नेह
अप्रदर्शित प्रेम
कांधे पे पुत्र।

बिता दी उम्र
बुढ़ापा लावारिस
ख़्वाब अधूरे।

बीता सावन
रुठी रही बरखा
कृषक दुखी।

~ शशि मित्तल 'अमर'

शिव पूजन
पहन बरसाती
चढ़ाया जल।

सावन मेघ
रिमझिम बरसा
मन तरसा।

सीधी बारिश
गैलरी सजे पौधे
सूखे ही बैठे।

~ शशि त्यागी

छोटा था गाँव
सुखी ज़िंदगी भली
छीने शहर।

~ डॉ. शेख अब्दुल वहाब

बरखा पानी
जग पालन हारी
करें किसानी।

सुहानी भोर
घटाएं घनघोर
नाचते मोर।

कड़क धूप
तन मन नाजुक
मुरझा रूप।

भोर सुहानी
रेडियो भी सुनाती
राम कहानी।

हुई बारिश
उमस भरी गर्मी
हुई खारिज़।

सूखे हैं खेत
बरसे नही मेघ
लगते जेठ।

कड़क धूप
तन मन नाजुक
मुरझा रूप।

एक युवती
दुःख में तपकर
निखर जाती।

बारिश बूंदें
झमाझम बरसे
मनवा झूमे।

सारा आकाश
नक्षत्रों का निवास
बँधाए आश।

बदरी छाए
मन गुनगुनाए
पी मन भाए।

सघन वन
बड़ा ही सुहावन
हर ले मन।

सुई न धागा
जख्म के भरने पे
जागे अभागा।

भोर सुहानी
रिमझिम बरसे
बरखा पानी।

मेघ जानते
कंकड़ में शंकर
जल चढ़ाते।

भोर वंदन
रेशम की डोर में
रक्षा बंधन।

गुम हो गए
बारिस वाले मेघ
ढूंढे नयन।

मिट्टी का घर
छप्पर से निकले
चूल्हे का धुँआ।

सावन तीज
सौभाग्य का प्रतीक
निभाए रीत।

~ स्वाति गुप्ता 'नीरव'

पुराने दिन
फिर नही आएंगे
अगले गिन।

जोकर प्यारा
हँसाता है सबको
चरित्र न्यारा।

तमन्ना पूरी
फिर क्यों रखते हो
प्रभु से दूरी।

~ सत्येन्द्र छिब्बर

पक्षी उड़ते
नभ की धड़कन
तेज़ हो गई।

~ सरोज रानी

कांधे पे थैला
चला राही अकेला
छोड़ झमेला।

बाप बेचारा
उदर की खातिर
रोटी सेंकता।

घरों में पानी
रिमझिम बरसै
बूंदें सुहानी।

कैसा हुनर
गौरैया ने बनाया
अपना घर।

पिता संस्कार
निखारते आचार
सद विचार।

पिता छतरी
धूप की तपन से
बचाए सदा।

पिता हमारे
ईश्वर की सौगात
निभाते साथ।

पिता का स्नेह
गंगा यमुना धार
बहे अपार।

बरषी बूंदें
पत्तियां तृप्त हुई
पानी पीकर।

बूंदें बरसी
दामिन दमकती
धरा हरषी।

यमुना तीर
गोपी सभी अधीर
श्याम बेपीर।

ओढ़ रजाई
शिशिर ऋतु आई
धुंध है छाई।

~ सुनीता दीक्षित 'श्यामा'

नयन भीगे
दरस को तरसे
आंसू बरसे।

~ सुनीता पुनिया

आटा में घुन
सफाई है जरूरी
कीट-प्रसून।

बो रहे नेता
आश्वासन के पौधे
आम बौराये।

~ सुनील गुप्ता

वर्षा का जल
घुमड़ कर आया
जीवन लाया।

~ सुनील जैन राना

बादल फटा
सैलाब बना पानी
मची तबाही।

वृक्ष उखाड़े
बारिश को तरसे
बादल भागे।

वृक्षारोपण
मांगे पर्यावरण
स्वस्थ जीवन।

चले कुल्हाड़ी
हुए पेड़ पे घाव
गायब छाँव।

पेड़ काटोगे !
थोड़ा छाव में बैठो
सुख पाओगे।

ठंडी छाव सा
पिता का वरदान
जीवन ज्ञान।

मिलते सुख
पिता के चरणों में
कभी न दुख।

गर्मी बढ़ती
बदलता मौसम
प्यासी धरती।

सूखे दरख्त
पंछी ढूढें कोटर
भूखे मरते।

सूखते पत्ते
बिगड़ता मौसम
हवा गरम।

घन बरसे
उपवन सरसे
तड़ाग भरे।

दीपक जले
तम जग का हरे
उल्लास भरे।

~ सुभाष शर्मा

वक्त की रेत
सब यहां जोतते
इच्छा के खेत।

कहां अंतर
मोमिन औ क़ाफिर
पूजें पत्थर।

पर्यावरण
श्रद्धा के अभाव में
सिर्फ़ दोहन।

अजीब हाल
चौथे खंभे का अर्थ
बिकाऊ माल।

नीति निराली
वोटर को लालच
देश को गाली।

अजीब क्रीड़ा
देह कब समझे
मन की पीड़ा।

अमृत काल
बधिर है विक्रम
मूक बेताल।

सच्चा जो बंदा
ज्यों अंधे जगत में
चश्मों का धंधा।

दुःख पहाड़
जग बहरा अंधा
मत दहाड़।

सच्ची सीरत
प्रेम के पदचिह्न
बनते तीर्थ।

जीवन पथ
साये सा संग-संग
चले नेपथ्य।

उसकी कमी
टूटी शाख़ में बची
जैसे हो नमी।

मन के भाव
अविरल प्रवाह
ढूंढ़ते थाह।

सच्ची सीरत
प्रेम के पदचिह्न
बनते तीर्थ।

~ सुरेंद्र बांसल

फलों से लदीं
झुकी हुईं डालियाँ
कद में ऊँची।

बेटी सयानी
माँ ने सहेज रखी
छठी की फ्राक।

बेटियाँ जहाँ
रूठी हुई खुशियाँ
आ जातीं वहाँ।

बेटी सुमन
एक संग सजाये
दो उपवन।

तंत्र लाचार
बेटी तक पहुँचे
घिनौने हाथ।

~ डॉ. सुरंगमा यादव

मेघ बरसे
गरीब की झोपड़ी
पानी में नाव।

झरती बूँदें
मन के मरुथल में
खुशी की धार।

मेघ मल्हार
जीवन का आधार
धरती झूमे।

यौवन भरीं
इठलाती नदियां
घन घमंड।

दादुर बोले
टिप टिपाती बूँदें
ऋतु संगीत।

नग्न औरत
मरती संवेदना
विकास पथ।

ढलती रात
दिए बुझ गए हैं
जिंदा हौंसले।

सूखते रिश्ते
झूठी मुस्कुराहटें
तन्हा अंतस।

चरम क्षण
अनुभूति की गूँज
चेतना चित्र।

~ सुशील शर्मा

हुई बारिश
निकलते बाहर
कीट फफूंद।

~ सूर्यकरण सोनी 'सरोज'

नारी की व्यथा
द्रौपदी, मीरा, राधा
सीता की कथा !

जलते देखा
दहेज की ज्वाला में
सिन्दूरी रेखा !

आज की नारी
फैशन में फेंक दी
तन की साड़ी !

आज की बहू
दहेज की बेदी पर
बहाती लहू !

स्टोव क्यों फटा
दहेज हेतु जली
माँ की लाडली !

गर्भ में आती
जब भी भ्रूण कन्या
मार दी जाती !

सूली जो चढ़े
उनका नाम आज
कोई न पढ़े !

~ सूर्यनारायण गुप्त 'सूर्य'

मिटा अंधेरा
अमावस की रात
ज्ञान प्रकाश।

~ सोनम

बंधन भूले
भाई और बहना
तीजों के झूले

झूले हिंडोले
समय की बाढ़ में
लें हिचकोले।

बरसो मेघा
अब तरसाओ न
प्यासे मनवा।

भोर की बेला
सूरज सुनहरा
छटा अंधेरा।

बादल फटा
कहर भयंकर
आफत भारी।

पादप खड़े
सब कुछ सहते
मौन रहते।

~ हरावती लकड़ा

बरसा पानी
कुम्हार परेशान
खुश किसान।

चैन से बैठा
पिंजरे में परिंदा
नहीं है जिंदा।

नहीं अलेख
मनोव्यथा की कथा
आँखें आलेख।

मौन मुखर
बेज़ुबान की पीर
दृगों में नीर।

वक्त की तुला
सरोकार का भार
तोलती खरा।

बरखा रानी
सासरे से रूठ के
आई मायके।

अथाह वृष्टि
दरकते पहाड़
रूष्ट है सृष्टि।

सफेद बाल
देख सिकुड़ी खाल
वृद्ध बेहाल।

धरा से लूटा
छिपा न पाया जल
फटा बादल।

रंगत लाई
श्रमिक की कमाई
बेटी पढ़ाई।

आया सैलाब
गली मोहल्ला बस्ती
चलती कश्ती।

बाढ़ का गुस्सा
गले तक है डूबा
आदमी प्यासा।

कर भ्रमण
हटा रही है नदी
अतिक्रमण।

देख उत्तंग
आये काटने वाले
मेरी पतंग।

बहकी नदी
हद को पार कर
गड्ढों में फंसी।

फटा बादल
सिलाई करे कौन
दर्जी है मौन।

पलकों तले
अश्कों से भरा सिंधु
बालिका वधू।

मिट्टी का घड़ा
तपकर रखता
जल को ठंडा।

सब सपना
आईने वाला शख्स
बस अपना।

रहे रिसते
मुट्ठी से रेत जैसे
स्वार्थ के रिश्ते।

आई बारिश
भीगे हैं हम कब
नहाता छाता।

शैशव मस्त
उत्साहित यौवन
बुढ़ापा पस्त !

काना-फूँसी ने
बिना दियासलाई
आग लगाई।

जीना दूभर
नदी किनारे घर
बाढ़ का डर।

देख अकेला
बादलों के झुंड ने
रवि को घेरा।

चुकता कर्ज
चुकाना अहसान
नहीं आसान।

पीस न सका
चक्की का एक पाटा
गेहूं का आटा।

~ हंस जैन

स्वर्णिम आभा
आदित्य ने लुभाया
प्रातः जगाया !

जीवन धूनी
बीत जाता है वर्ष
रैन बसेरा !

माटी की देह
माटी में ही मिलना
सब खिलौना !

~ ज्ञान भंडारी

राही अकेला
आँखों में है मंजिल
चला जा रहा।

मन बावरा
छायी है काली घटा
हर्षित धरा।

~ श्रवण कालवा

पर्यावरण
बिगड़ा संतुलन
वन हनन।

विषाक्त खले
वायु जल आहार
संकट पले।

रूठा गगन
अणु आयुध खेला
निकृष्ट जन।

विनाश लीला
अहितकर चाह
ढहता किला।

आतंकी बम
सहमे हुए लोग
हत्या निर्मम।

खुशियाँ मिले
युग संधि की बेला
चमन खिले।

निर्झर शोर
फुदकती गौरैया
खुशी विभोर।

बरखा आई
तन मन भिगोया
धरा मुस्काई।

नभ की ओर
ताकती प्यासी धरा
नहीं है छोर।

छाई उदासी
बीत रहा आषाढ़
धरती प्यासी।

जल - मटका
निर्मोही पयोधर
नभ अटका।

जल संकट
उछला तापमान
सूखते तट।

चेतन मन
साहस की चिंगारी
नव जीवन।

अपने कर्म
बदल कर रूप
बनते धर्म।

आस्था की राह
ज्ञान कर्म उपासना
जीने की चाह।

~ श्रवण चोरनेले 'श्रवण'

अन्य भाषा व बोलियों के हाइकु

(छत्तीसगढ़ी)
खेत के बुता
दाऊ भुतियाए के
करे किसानी।

~ स्वाति गुप्ता 'नीरव'

(राजस्थानी हाइकु)

नैणा काजल़
ढूलग्यो पिव म्हाँरा
आँसुड़ा साथै !

~ प्रवीण सिंह
बी.सिन्दल

धरा धोरां री
लिलोण ने लील दी
थार की गर्मी।

ओल्यूँ सतावै
आबू होंपारी लागै
पिऊँ री आस।

भरे कुलाचाँ
बाडाँ में भेडाँ सारी
रेबारी ढाणी।

साग सांगरी
घी ने रोटी बाजरी
मरु रो स्वाद।

~ मीनाक्षी कुमावत 'मीरा'

(सिन्धी हाइकु)

केड़ो न सस्तो
ग़रीब जो पघरु
रोटी ब़ जून।

ततलु सिजु
टुब़ंदो समुंड्र में
सीतलु थींदो।

राति जी राणी
सिज सां छो लज़ाए
मुंहुं लिकाए।

~ माया वसन्दानी

(अवधी हाइकु)
पतझरवा
चुराय कै लै गवा
पेड़ पतवा !

उडै चिरैया
मुँह का छुपाय कै
हंसै चिरैया !

झुलवा झूलै
पात-पात छुई कै
चिरवा झूमै !

छोड़ किनार
आगे बढ़त जात
पानी कै धार !

संझा बतिया
अम्मा जलावै दीया
आवौ जिजिया !

~ डॉ. मिथिलेश
दीक्षित

(ओड़िया हाइकु)
साधु संगत
नाउरी बिना पारि
जीबन पोत।

~ विद्युत प्रभा

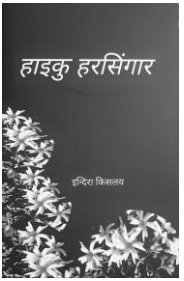

हाइकु हरसिंगार (हाइकु संग्रह)

कवयित्री - इन्दिरा किसलय

प्रकाशन - अविशा प्रकाशन, नागपुर (महाराष्ट्र)

संस्करण : प्रथम, 2023 , मूल्य- 100/- ISBN - 978-93-94577-46-6

हृदय किसलय के सुंदर उद्गार : 'हाइकु हरसिंगार

विदूषी हाइकु कवयित्री आ. इंदिरा किसलय जी का प्रथम हाइकु संग्रह 'हाइकु हरसिंगार' प्राप्त हुआ, मन बाग-बाग हो उठा। मेरे प्रिय हाइकु रचनाकारों की श्रेणी में इंदिरा किसलय जी प्रथम पंक्ति की हाइकु कवयित्री हैं। दिवस आज बेहद खास हुआ क्योंकि इस संग्रह को पढ़ने की बेहद प्रतीक्षा मुझे पहले से थी। कवयित्री इंदिरा किसलय जी के कई हाइकु मेरे द्वारा संपादित हाइकु पत्रिका 'हाइकु मञ्जूषा' में प्रकाशित हुए हैं। आ. इंदिरा किसलय जी हाइकु, ताँका, सेदोका, चोका, हाइबुन आदि जापानी शैलियों की पारखी कवयित्री हैं। अविशा प्रकाशन, नागपुर से प्रकाशित 48 पृष्ठीय 'हाइकु हरसिंगार' प्रकाशन वर्ष 2023, बहुत ही सुंदर, आकर्षक कलेवर, उत्कृष्ट छपाई युक्त मोटे कागजों में बहुत ही सुंदर-सुंदर 346 हाइकु पुष्पों से पुष्पित व सुवासित होता हुआ सुसज्जित है। देश के प्रख्यात व्यंग शिल्पी आदरणीय गिरीश पंकज जी एवं नवोदित प्रवाह के संपादक आदरणीय रजनीश त्रिवेदी 'आलोक' जी जैसे विद्वान रचनाकारों द्वारा प्राक्कथन एवं भूमिका रुपी आशीष प्राप्त होना संग्रह के लिए एवं कवयित्री के लिए निश्चय ही गर्व एवं सौभाग्य का विषय है।

हाइकु हरसिंगार के हाइकुओं में प्रकृति, प्रणय, नारी, अध्यात्म, राजनीति, हिन्दी आदि किसी भी विषय पर क्यों न हो, इन सबमें कवयित्री की पारखी भावाभिव्यंजना की अनुपम शैली पाठकों के मन को सहज मोह रही है। संग्रह के हाइकुओं में प्रकृति के प्रति सूक्ष्मावलोकन की दृष्टि के साथ साथ मुख्यतः हृदय पक्ष की प्रधानता दृष्टिगोचर है। प्रकृति विषयक संग्रह का प्रथम हाइकु देखें -

अनोखी कृति/वर्षा की हर बूँद/है गणपति । (पृष्ठ क्र. 12)

हाइकु रचना प्रवृत्ति में हाइकु की निष्णात कवयित्री प्रकृति के साथ बिल्कुल तल्लीन हैं, रचना देखें -

अजन्मे गीत/नदी और जंगल/हैं मेरे मीत । (पृष्ठ क्र. - 13)

नभ तरु से/बरसे धारासार/हरसिंगार । (संग्रह का केंद्रीय हाइकु : पृष्ठ क्र. - 14)

रजनी का सुंदर चित्र प्रस्तुत करता हुआ एक हाइकु -

'चुप है चाँद/बड़बोले जुगनू/साक्षी रजनी । (पृष्ठ क्र. 15)

स्वयं महकता एवं अग-जग को महकाता सा एक सुंदर हाइकु देखें -

'गीत महका/मोगरे के फूल सा/हवा बौराई । (पृष्ठ क्रमांक - 17)

जल रूपी दर्पण में प्रतिबिंबित स्वयं के बिंब को देखकर कवयित्री का मन स्वयं को खोजने लग जाता है -
'जल दर्पण/प्रतिबिंबित बिंब/उर्मिल मन । (पृष्ठ क्रमांक - 18)

संग्रह के बहुत सारे हाइकु मन को सहज लुभाते जा रहे हैं, लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ, हाइकु देखें और गुनें -

मन में हूक/अमराई से उठी/कुहू की हूक (पृष्ठ क्रमांक - 20)

अमृत झरा/चाँद जैसा हाइकु/रचती धरा । (पृष्ठ क्रमांक - 22)

खिली है रात/नील कमलिनी सी/ऋतु सरसी । (पृष्ठ क्रमांक - 24, द्विक्रिय हाइकु)

प्रणय के हाइकु -

तुम्हारी हँसी/धूप में बरखा सी/दुविधा कैसी । (पृष्ठ क्रमांक - 25)

पुराने खत/क्यों सहजे हैं मैंने/पूछना मत । (पृष्ठ क्रमांक - 26)

बूँदों का जाल/नैन हैं समंदर/गीला रुमाल । (पृष्ठ क्रमांक - 28, भाव बिम्ब)

तुम्हारे खत/तिजोरी में रखे हैं/चुराना मत । (हृदय पक्ष - पृष्ठ क्रमांक - 28)

ताजी पंखुड़ी/रखी थी किताब में/है सूखी पड़ी । (स्मृति बिंब - पृष्ठ क्रमांक - 29)

प्रीत कस्तूरी/मृग मन की कथा/सदा अधूरी । (पृष्ठ क्रमांक - 30)

आंखें हैं म्यान/आंसू और मुस्कान/दोनों कृपाण । (पृष्ठ क्रमांक - 30)

धूप का गांव/रुक जाओ दो घड़ी/यादों की छांव । (पृष्ठ क्रमांक - 32)

नारी पर -

धरा सी धीरा/गंगा सी सदानीरा/नारी तापसी । (पृष्ठ क्रमांक - 33)

नभ छू चला/बेटियों का हौसला/वक्त बदला । (पृष्ठ क्रमांक - 34)

अध्यात्म पर शब्द चित्र -

तन दीपक/मन दीप्त वर्तिका/सूफी क्षणिका । (पृ.क्र. - 37)

रूप निर्झर/ऋचाएं झरती हैं/नित्य भू पर (पृष्ठ क्रमांक - 41)

राजनीति पर -

विधि के हाथ/फकीरों सी लकीरें/श्रम के साथ । (पृष्ठ क्रमांक - 44)

श्रम की स्याही/मजदूर का ख्वाब/रोटी किताब । (पृष्ठ क्रमांक - 45)

हिंदी भाषा पर -

दीपक तले/तम विगलित हो/मंजिल मिले । (पृष्ठ क्रमांक - 47)

रोटी से जुड़े/मिट्टी की और मुड़े/हिंदी का यान (पृष्ठ क्रमांक - 48)

प्रकृति, प्रणय, नारी, अध्यात्म, राजनीति एवं हिंदी इन छः विषयों पर आधारित एक से बढ़ कर एक सुंदर उत्कृष्ट हाइकु 'हाइकु हरसिंगार' में संग्रहित हुए हैं, इन हाइकुओं को पढ़ने, गुनने, गुनगुनाने से निश्चय पाठक का मन आनंद से आप्लावित हो उठेगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस अनुपम उत्कृष्ट हाइकु कृति से निश्चय ही हिंदी हाइकु संसार धनाढ्य हुआ है। कृति की विदूषी कवयित्री आदरणीया इंदिरा किसलय जी को इस उत्कृष्ट हाइकु संग्रह 'हाइकु हरसिंगार' के प्रकाशन की अनेकानेक शुभकामनाएं व हार्दिक बधाइयां ज्ञापित करता हूँ।

~ प्रदीप कुमार दाश दीपक

संपादक : हाइकु मञ्जूषा

साभार पुस्तक प्राप्ति सूचना : --

◆ **कवयित्री आ. सुनीता दीक्षित 'श्यामा'**
निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा (उ.प्र.)

(हाइकु संग्रह)

1- भोर किरण - 2023
2- वसुन्धरा की आत्मा - 2023
3- यादों के साए- 2023
4- अनकहे आँसू- 2023
5- ख्वाहिश की डोर - 2023
6- बरगद की छाँव- 2023
7- जीवन क्या है - 2023
8- प्रकृति प्रेम - 2023
9- मन के भाव- 2023
10- सतरंगी फुलवारी - 2023
11- बागों के फूल - 2023
12- ओस की बूँद- 2023
13- धरा की गोद- 2023

(कतौता संग्रह)

1- अमूल्य धरोहर - 2023
2- अनमोल कतौता- 2023
3- खुशियों की सौगात - 2023

(ताँका संग्रह)

1- प्रिय की यादें - 2023

(सेदोका संग्रह)
01 - सफलता की चाबी - 2023

(चोका संग्रह)
01 - खामोशियाँ – 2023

◆ **कवयित्री आ. अमिता शाह 'अमी'**
आस्था प्रकाशन, नागपुर (महाराष्ट्र)

(जापानी काव्य संग्रह)
01 - सूर्याराधन – 2023

◆ **कवयित्री आ. इन्दिरा किसलय**
अविशा प्रकाशन, नागपुर (महाराष्ट्र)

(हाइकु संग्रह)
01 - हाइकु हरसिंगार

◆ **कवयित्री आ. आभा दवे**
मुम्बई भाषा परिषद, मुम्बई (महाराष्ट्र)

(हाइकु संग्रह)
01 - नवचेतना

आपके प्रतिभाव...

प्रदीप कुमार जी,

आप कितनी लगन व समर्पण से हिन्दी-साहित्य, विशेषतः हाइकु विधा के लिए सेवारत हैं, उसके लिए आप को जितना भी साधुवाद दिया जाये, कम होगा।

आपने हाइकु मंजूषा को, जो ऊँचाई प्रदान की है, वह स्तुत्य है। सारे हाइबुन अत्यंत उच्चकोटि के हैं। इनमें, मेरे हाइबुन को स्थान देकर मुझे अत्यंत सम्मान दिया है। जिसके लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

सादर अभिवादन।

~ राधा बल्लभ अग्रवाल
(नयी दिल्ली)

आदरणीय प्रदीप कुमार जी,

हिन्दी साहित्य की सेवा साधना के साथ साथ हमारे जैसे अनगढ़ पत्थरों को भी तराश रहे हैं। इस अनमोल अंक में मेरे हाइबुन को स्थान दे कर मान दिया है। उसके लिए दिल से बहुत बहुत आभार व धन्यवाद।

~ राजेन्द्र सिंह राठौड़

आदरणीय प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' जी

सादर अभिवादन, आप धुन के पक्के हैं, जो सोचते साकार कर ही छोड़ते।

लो, हा इ बु न अंक प्रकाशित, अभिनंदन...

एक कदम
हा इ बु न के नाम
सही पैगाम।

~ अविनाश बागड़े

अनुपम और अभूतपूर्व विशेषांक ! बहुत सुन्दर कलेवर में हाइबुन की एक बहुत स्तरीय, उपयोगी और महत्वपूर्ण प्रस्तुति !

हाइकु मंजूषा के हाइबुन विशेषांक को अवश्य ही उपलब्ध कर लें। प्रतियाँ समाप्त हो जाती हैं। दोबारा छापना कठिन होता है।

~ मिथिलेश दीक्षित

आदरणीय मान्यवर,

आज ही हाइकु मंजूषा का हाइबुन विशेषांक प्राप्त हुआ। बहुत सुन्दर मुखपृष्ठ है। आपकी मेहनत को सलाम करती हूँ। आपने इतनी अच्छी सौगात हम सब को दी है इसलिए आपकी आभारी हूँ।

~ रूबी दास

आदरणीय प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' जी द्वारा प्रकाशित "हाइकु मंजूषा का अक्तूबर-दिसम्बर अंक आज प्राप्त हुआ। शानदार मुखपृष्ठ के साथ। कई मंजे हुए हाइबुन लेखकों की लेखनी से सजा हुआ। बहुत धन्यवाद, सर मुझे समय पर प्रेषित करने के लिए। साधुवाद एवम् शुभकामनाएँ।

~ अमिता शाह 'अमी'

बहुप्रतीक्षित, स्तरीय देश विदेश के रचनाकारों द्वारा सृजित हाइबुन विशेषांक, जिसे करीने से सजाया डॉ.मिथिलेश दीक्षित जी व प्रदीप कुमार दाश "दीपक' जी ने। जिसमें ५१ हाइबुनकारों के हाइबुन संग्रहित हैं।

दीदी मिथिलेश दीक्षित जी व प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' जी कोटि-कोटि बधाइयां।

~ डॉ. आनंद प्रकाश शाक्य

आदरणीय प्रदीप कुमार दाश जी, आपका श्रम व साहित्य निष्ठा नमनीय है। नव विशेषांक हेतु बहुत-बहुत बधाई। मेरी रचना को स्थान देने हेतु हृदयतल से आभार ..

~ पुष्पा सिंघी

बहुत ही सुंदर विशेषांक बन पड़ा है। आदरणीय प्रदीप जी जिस निष्ठा से हाइकु विधा के लिए समर्पित हैं, उसके लिए उन्हें सहस्त्र प्रणाम करता हूँ। एक और बेहतरीन अंक के लिए आपको बधाई एवं असीमित शुभकामनाएं....

मेरे हाइबुन को इस प्रतिष्ठित एवं ऐतिहासिक अंक में स्थान देने हेतु हृदयतल से आपके प्रति आभारी हूँ।

हाइकु मंजूषा में इस बार जापानी विधा "हाइबुन" पर आधारित विशेषांक प्रकाशित हुआ है। पचास रचनाकारों की रचनाओं से सुसज्जित सम्भवतः विश्व के इस प्रथम हाइबुन विशेषांक में मेरी रचना को स्थान देने के लिए संपादक श्री प्रदीप कुमार दाश दीपक जी के प्रति हार्दिक आभारी हूँ। पत्रिका के उन्नयन के लिए असीमित शुभकामनाएं ....

~ अलंकार आच्छा

विविध भाव
संजोए है मंजूषा
हाइकु धन।

दिली बधाई
मंजूषा का खज़ाना
खुशियाँ लाई।

~ अमिता शाह-'अमी'

हाइबुन विशेषांक के रचनाकारों के बीच स्वयं का नाम देख कर बहुत खुशी हुई इसके लिए प्रदीप दाश जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, साथ ही सभी रचनाकारों को बधाई प्रेषित करती हूँ।

~ प्रतिभा त्रिपाठी

बहुत सुन्दर हाइबुन विशेषांक, प्रदीप दाश 'दीपक' जी के सम्पादन में निर्गत हाइकु मंजूषा का बहुत ही उपयोगी और इस विधा का प्रथम विशेषांक। प्रदीप जी की जितनी प्रशंसा की जाये, कम ही होगी।

~ मिथिलेश दीक्षित

भाई प्रदीप कुमार दास जी की साहित्यिक साधना के परिणाम स्वरूप एक नई जापानी विधा हाइबुन शैली का विशेषांक हम सब साथियों को दीप पर्व पर एक नवीन काव्य पुष्प के रूप में प्राप्त हुआ, जिससे जीवन सुरभित मय हो उठा, भाई को असीम स्नेह सह मेरा आशीष। साधना मय जीवन में सदैव पग बढ़ते रहे मेरी शुभकामनाएं।

~ देवेन्द्र नारायण दास

सृजनरत छत्तीसगढ़ के भाई प्रदीप कुमार दाश दीपक द्वारा संपादित हाइकु मंजूषा संचयनिका अक्तूबर, नवंबर, दिसंबर 2023 हाइबुन विशेषांक आज ही प्राप्त हुआ। नितनूतन प्रयोगों के धनी रचनाकार ने मेरे मन वैशिष्ट्य में इतने कोहनूर भर दिए कि सब जुगुनू द्वारा विखेरित मन माणिक्य सा मेरे पुस्तकालय में दीपित हो रहे हैं। सभी रचनाकार बंधुओ को बधाई और मेरा भी हाइबुन 'भागतेपथ' प्रकाशित किया है आपका नैष्ठिक श्रम नमस्य है आपके सातत्व की शुभकामना।

~ रामनिवास पंथी

हाइकु मंजूषा का हाइबुन विशेषांक आ गया है। सभी से आग्रह है, हस्तगत करें। प्रतियाँ समाप्त हो गयीं, तो दोबारा प्रकाशित होना सम्भव नहीं है। यह हिन्दी में हाइबुन पर पहला विशेषांक है, जिसे प्रदीप कुमार दाश जी ने बहुत परिश्रम से सम्पादित किया है।

~ मिथिलेश दीक्षित

आदरणीय प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' जी जापानी विधा की कविताएँ जैसे हाइकु, ताँका,कतौता, चौका इत्यादि विधा लेखन में सिद्ध हस्त है। वे बहुत ही कर्मठ एवं जुझारू व्यक्तित्व के धनी है। सदैव नित नवीन जापानी विधा की कविताएं सीखने में उनका मार्गदर्शन हमें समूह में मिलता रहता है। इसबार उनका हाइबुन विधा में साझा संकलन प्रकाशित हुआ है, जिसमें मेरे हाइबुन को भी स्थान मिला है। हाइबुन में पहले एक यात्रावृत्तांत गद्य में लिखकर उस पर हाइकु लिखना होता है। सर्वप्रथम प्रदीप कुमार दाश दीपक जी को हार्दिक बधाई एवं साधुवाद।आप इसी तरह प्रगतिपथ पर अग्रसर रहें। सभी हाइबुनकारों को बहुत बहुत बधाइयाँ।

~ मधु सिंघी

नमस्कार दोस्तों,

हाइकु मंजूषा के हाइबुन विशेषांक में, मेरे लिखे हाइबुन को स्थान देने हेतु संपादक आदरणीय प्रदीप दाश सर का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

किसी यात्रा का वर्णन कम शब्दों में करते हुए, एक मनोरम दृश्य को हाइकु में प्रस्तुत करने की विधा हाइबुन, का यह अंक बहुत खूबसूरत है।

~ शर्मिला चौहान

भाव की नदी
है मंजूषा किताब
गोता लगाएं।

गुलाब जैसी
मंजूषा की सुगंध
चहुं फैलाएं।

~ सुनीता दीक्षित

आदरणीय संपादक श्री प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' जी, 'हाइबुन विशेषांक' मिला, बहुत आभार। शायद, हिन्दी जगत ही नहीं, विश्व में किसी पत्रिका का यह पहला 'हाइबुन विशेषांक' होगा। अंक संग्रहणीय तो है ही, लेकिन जब जब फुर्सत मिले तब तब बार-बार पढ़ने लायक है। हाइकु जगत में आपका यह कार्य कोई भूल नहीं सकता। आपको तहे दिल से बधाई।

~ तुकाराम पुंडलिक खिल्लारे

आदरणीय प्रदीप जी, हाइबुन विशेषांक प्राप्त हुआ। यह पत्रिका अपने आप में निराली है ऐसा लगा मानो सभी रचनाकारों ने अपनी यात्राओं के विभिन्न सुगंधियों वाले पुष्पों को सजा कर, एक विशाल गुलदस्ता भेजा है। आपकी पूरी टीम व सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। धन्यवाद।

~ प्रमोदिनी शर्मा

आदरणीय मान्यवर, आज हाइकु मञ्जूषा मुझे प्राप्त हुई। अति सुंदर.. संग्रहणीय अंक मेरी रचना को पत्रिका में स्थान देने हेतु हार्दिक आभार।

~ मनीष कुमार श्रीवास्तव

मेरी कल्पना...
अब आ गई
हाइबुन पुस्तक
खुशियां लिए
यात्राओं की स्मृतियां
खट्टी मीठी है
यादें संजोए हुए
लगती मानो
विशाल नभ पर
शब्द सितारे
हाइकुकारों ने ही
टाँक दिए हैं सारे ।।

~ प्रमोदिनी शर्मा
आगरा

बहुत ही शानदार अंक...
आ. प्रदीप सर साहित्य के लिये पूर्णतः समर्पित....
सभी रचनाकारों को खूब बधाई...

~ विद्या चौहान

प्रदीप कुमार दाश दीपक

जापानी काव्य विधाओं को सतत प्रकाश में रखने वाला एक जुझारू दीपक जिनकी अगुवाई में "हाइकु मञ्जूषा" HAIKU MANJUSHA प्रदीप कुमार दाश "दीपक" निरंतरता की पहचान लिए प्रकाशित हो रही है। ये उनका बड़प्पन ही है कि मुझे भी इस त्रैमासिक के संपादक मंडल में स्थान दिया गया है। डॉ. मिथिलेश दीक्षित जी जैसी हाइकु हस्ती इस पत्रिका की संरक्षक हैं, ये बड़ी बात।

वर्ष 2023 का ये अंतिम संस्करण गद्य और पद्य दोनों को समाहित करने वाली जापानी विधा यानी हाइबुन को समर्पित है। देश विदेश के अर्धशतक हाइकुकारों की कलम से निकले सृजन ने इस हाइकु मंजूषा को नया आयाम प्रदान किया है। नागपुर के व्हाट्सएप समूह "हाइकु से हाइबुन" के कई हस्ताक्षरों का समावेश भी उल्लेखनीय है। ये प्रकाशन नहीं एक आंदोलन है जिसकी मशाल तले कई हस्ताक्षर अपने लेखन को नई दिशा दे रहे हैं।

सर्वभाषा ट्रस्ट से प्रकाशित इस पुस्तक का मुखपृष्ठ जहां अत्यंत आकर्षक है वहीं भीतर के साहित्यिक कलेवर का संयोजन भी उत्कृष्ट बन पड़ा है।संपादक,संरक्षक और संपादक मंडल का साधुवाद। वर्ष 2024 नए उत्साह और उमंग के साथ यह प्रकाशन नए कीर्तिमान स्थापित करे इसी आशा और विश्वास के साथ मैं...

~ अविनाश बागड़े

'हाइकु मञ्जूषा' का एक विशेष अंक प्राप्त हुआ। यह यात्रा अंक है यानि कि 'हाइबुन' अंक है। किसी भी यात्रा की अनुभूति को कुछ पंक्तियों में लिखकर, पंक्तियों के अंत में एक ऐसा हाइकु पिरोया जाता है,जिसमें पंक्तियों का सार हो- इसे ही जापानी भाषा में हाइबुन कहा जाता है । आजकल इसकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है।

संकल्पित प्रतिभा से समृद्ध, हाइकु मञ्जूषा के प्रतिष्ठित संपादक आदरणीय प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' जी एक यात्रा पर हैं। अपने संपादकीय में महाकवि बाशो का एक कथन अंकित करते हैं- "हर दिन एक यात्रा है .....।" और शायद इसी को लक्ष्य मानकर आदरणीय दीपक जी निरन्तर यात्रा में हैं। जापानी विधाओं से गुजरते-गुजरते इन्होंने हाइबुन को संयोजा है। इस अथक यात्रा में बहुत सारे लोग शामिल हैं।

'हाइकु मञ्जूषा' पत्रिका का यह हाइबुन विशेषांक,हिन्दी साहित्य का पहला विशेषांक है। इस ऐतिहासिक विशेषांक में पचास हाइबुनकार शामिल हैं। मुझसे भी आपकी मुलाकात होगी। सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई व अशेष शुभकामनाएँ।
धन्यवाद !

~ अजय चरणम्

हाइकु मञ्जूषा में मेरी रचना सम्मिलित करने के लिए संपादक प्रदीप कुमार दाश 'दीपक ' जी को बहुत-बहुत धन्यवाद एवं बधाई। गगन- सिंधु से वसुंधरा, कश्मीर से कन्याकुमारी, पर्वतों से समंदर, वनों से रेत तक की यात्राएं एक ही पैकेज में ! 'स्थिर-यायावरी' कहूँ तो अधिक सटीक लगेगा ! एक स्थान से इतनी यात्राएँ कर लीं अनोखे वाहन पर बैठकर ! वाहन का नाम है-- हाइकु मञ्जूषा 'हाइबुन - विशेषांक' अक्तूबर- दिसम्बर 2023। ऐसा वाहन जो स्थिर है किंतु यायावर भी ! संपादक प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' जी को बधाई,

जिन्होंने अनोखे वाहन की स्टीयरिंग सीट पर बैठकर यात्राएँ करवायीं-

यात्राएँ हुईं
अनोखा है वाहन
आनंद-यात्रा।

~ अर्चना यदु 'अनुपम'

प्रदीप जी नमस्कार,

अक्टूबर-दिसंबर का हाइबुन विशेषांक पी.डी.एफ. पर पढ़ा, बहुत अच्छा लगा। एक-एक रचनाकार को इतना अच्छा योगदान देने के लिए बधाई।

मैंने अभी तक दक्षिण में रामेश्वरम, कन्याकुमारी, पूर्व में दार्जिलिंग, नेपाल, उत्तर में अटलटनल, सिस्सु, दारचा पश्चिम में पूरा राजस्थान, द्वारका, मध्य में भोपाल आदि की अनेकों यात्राएं की हैं। ढेरों यादें व सुंदर स्मृतियाँ मन-मस्तिष्क में कुलबुला रही हैं, पर अफ़सोस ! मैं इस अनूठी कृति का हिस्सा न बन सकी। जिसका मुझे ताउम्र पछतावा रहेगा। शायद आगे कोई अवसर मिलेगा तो कोशिश करूंगी। शुभकामनाओं सहित।

~ आशा ज्योति

'हाइबुन' महीन मलमल सी नर्म कोमल मोरपंखिया, उतने ही आत्मीय स्पर्श से संवारने वाली विधा है। डॉ. मिथिलेश दीक्षित जी की प्रेरणा एवं प्रदीप कुमार दाशजी की अभिनव पहल सर्वथा स्तुत्य है।

51 हाइबुनकारों की अनुभूति का ऐश्वर्य "हाइकु मञ्जूषा" में देखा जा सकता है। इसमें न केवल भारत के विभिन्न प्रदेशों के, वरन कनाडा एवं अरब देशों के हाइबुनकार भी अपने हस्ताक्षर दर्ज कर रहे हैं। डॉ. मिथिलेश दीक्षित द्वारा संपादित कृति "प्रकृति एवं हाइबुन" की समीक्षा भी एक आकर्षण है।

मुखपृष्ठ दूरागत संगीत सा हृदय को आन्दोलित करता है।

~ इन्दिरा किसलय

हाइकु मञ्जूषा

समसामयिक हाइकु संचयनिका (त्रैमासिक पत्रिका)

वार्षिक सदस्यता राशि- 400/--
पंच वर्षीय सदस्यता राशि 1600/--
संरक्षक - 10000/--
हाइकु मञ्जूषा के सदस्य
(1) डॉ. मिथिलेश दीक्षित (संरक्षक)
(1) रुबी दास (पंच वर्षीय), (2) डॉ. सुशीला सिंह (पंच वर्षीय), (3) तुकाराम पुंडलिकराव खिल्लारे (पंच वर्षीय), (4) देवयानी बनर्जी (पंच वर्षीय), (5) डॉ. श्रद्धा वाशिमकर (पंच वर्षीय), (6) सूर्यनारायण गुप्त सूर्य (पंच वर्षीय), (7) अलंकार आच्छा (पंच वर्षीय), (8) अविनाश बागड़े (पंच वर्षीय), (9) अजय चरणम् (पंच वर्षीय), (10) श्रवण चोरनेले 'श्रवण' (पंच वर्षीय), (11) डॉ. पूर्वा शर्मा (पंच वर्षीय), (12) आभा दवे (पंच वर्षीय)
(1) चन्द्र प्रभा जी (वार्षिक), (2) प्रमोदिनी शर्मा जी (वार्षिक), (3) मीनाक्षी कुमावत 'मीरा' जी (वार्षिक), (4) अनिमा दास जी (वार्षिक), (5) श्रवण कालवा जी (वार्षिक), (6) निर्मला हांडे जी (वार्षिक), (7) अमिता शाह 'अमी' जी (वार्षिक), (8) विष्णु शास्त्री 'सरल' जी (वार्षिक), (9) राधाबल्लभ अग्रवाल जी (वार्षिक), (10) आर्विली आशेन्द्र लूका जी (वार्षिक), (11) मनीष कुमार श्रीवास्तव जी (वार्षिक), (12) पुष्पा मेहरा जी (वार्षिक), (13) चंद्रभान मैनवाल जी (वार्षिक), (14) डॉ. निहाल चंद्र शिवहरे जी (वार्षिक), (15) डॉ. मंजू यादव 'मृदुल' जी (वार्षिक), (16) विनीत मोहन औदिच्य जी (वार्षिक), (17) हरावती लकड़ा जी (वार्षिक), (18) आर.के.निगम 'राज' जी (वार्षिक), (19) प्रतिमा प्रधान जी (वार्षिक), (20) स्वाति गुप्ता जी (वार्षिक), (21) डॉ. नीना छिब्बर जी (वार्षिक), (22) इन्दिरा किसलय जी (वार्षिक), (23) आरती परीख जी (वार्षिक), (24) सुनीता दीक्षित जी (वार्षिक), (25) निर्मला सुरेंद्रन जी (वार्षिक), (26) कल्पना दुबे जी (वार्षिक), (27) अर्चना अनुपम जी (वार्षिक), (28) वर्षा अग्रवाल जी (वार्षिक), (29) प्रतिभा त्रिपाठी जी (वार्षिक), (30) अंजू श्रीवास्तव निगम जी (वार्षिक), (31) सावित्री कुमार जी (वार्षिक), (32) डॉ. सुरंगमा यादव जी (वार्षिक), (33) सरस दरबारी जी (वार्षिक), (34) मधु गुप्ता जी (वार्षिक), (35) विद्या चौहान जी, (36) पूनम भू जी, (37) विद्युत प्रभा जी (वार्षिक), (38) माया वसन्दाणी जी (वार्षिक), (39) राजेन्द्र सिंह राठौड़ जी (वार्षिक), (40) प्रवीण सिंह बी. सिन्दल जी (वार्षिक)
'हाइकु मञ्जूषा'* देश की एकल त्रैमासिक समसामयिक हाइकु पत्रिका का सदस्य बन कर आप भी हाइकु विधा के प्रसार में सहयोगी बनें। जुलाई-सितंबर 2023 तक जिन सदस्यों की वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है, इस सूची में उन सदस्यों का नाम विलोपित है। पत्रिका प्राप्ति की निरंतरता के लिए विलोपित तथा नवीन हाइकुकार/पाठक मित्रों से विशेष आग्रह है कि (वार्षिक/पंचवर्षीय) नवीन/नवीनीकरण शुल्क प्रेषित कर पत्रिका के प्रसार में आप अपना अमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें। आपके स्नेहिल सहयोग की प्रतीक्षा में आपका मित्र-
~ प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'
संपादक : हाइकु मञ्जूषा
मो.नं. 7828104111

हार्डबाउंड, पेपर बैक, ई-बुक व ऑडियो-बुक
ISBN के साथ किसी भी
भाषा में प्रकाशन के लिए हमें कॉल करें या लिखें।

सर्व भाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

E-mail : sbtpublication@gmail.com
Contact : 011-3501-3521, 9205461387

sbtpublication sarvbhashatrust Sarv Bhasha Trust
sarvbhashatrust sbhashatrust

हमारे यहाँ से प्रकाशित 30+ भाषाओं में 750+ पुस्तकें
www.sarvbhasha.in पर उपलब्ध हैं।

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संपादक

हाइकु मञ्जूषा

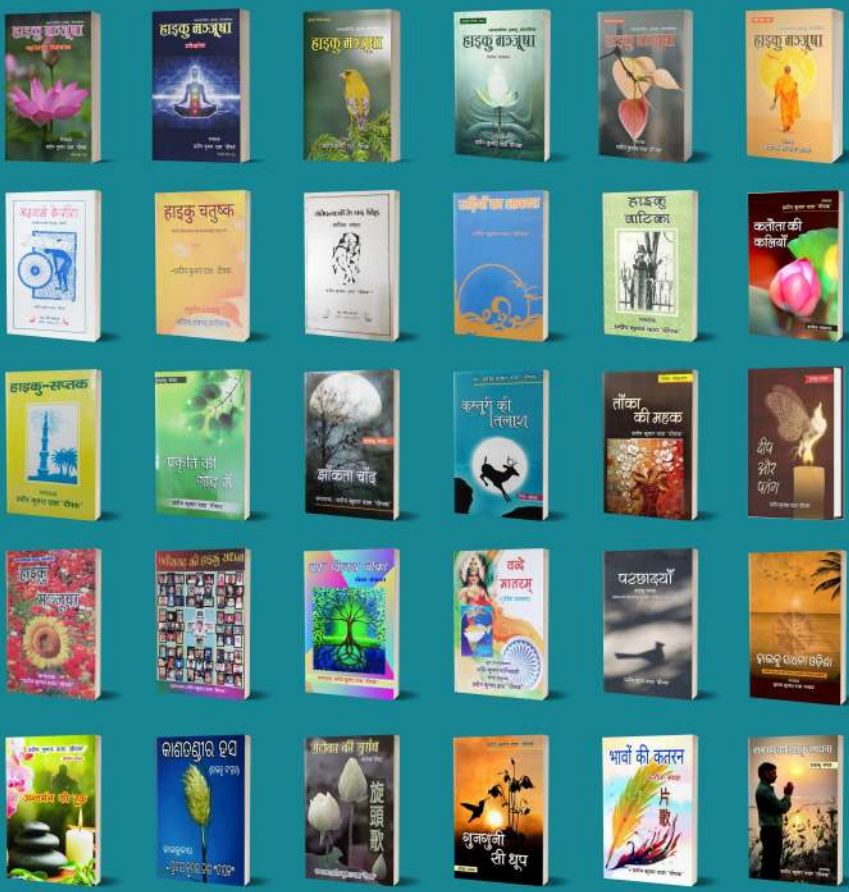

प्रकाशन

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

011-3501-3521, 9205461387